THE WORLD BANK

SCERT पटना द्वारा विकसित एक मासिक पत्र

e-संवाद

December 2018 Vol. 01 No. 08

विषय सूची

1। अपनी बात
2। अब तक की गई चर्चा
3। कौन भाषा कौन बोली
4। आपने साझा किया
5। 46 वीं राज्य स्तरीय विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी 2018–19
6। अंग्रेजी सिखाएँ
7। अपने विचार दें

शैक्षिक विचार

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

– आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864 – 1938)

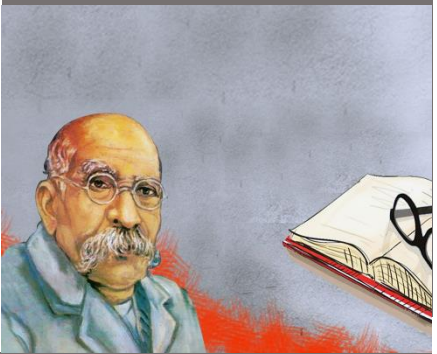

अपनी बात

प्रिय शिक्षक साथियों,

e संवाद के आठवें अंक के साथ पुनः आपके समक्ष उपस्थित हूँ। आप सबों ने e संवाद को सभी शिक्षक साथियों तक पँहुचाने का जो संकल्प लिया है, उसके परिणाम भी सामने आ रहे हैं। पिछले माह तक करीब 5000 शिक्षकों तक इसकी पँहुच की सूचना प्राप्त हुई थी। अभी कई मित्रों ने अपनी सूचना नहीं भेजी है। विश्वास है कि वे भी शिक्षकों तक इसे प्रेषित करते होंगे। परन्तु अभी भी अधिकांश शिक्षकों तक इसकी पहुँच नही हो पाई है। हम सब इसे पूरा करेंगें।

पिछले तीन अंकों से हम भाषा की प्रकृति, लिखने पढ़ने के सहज तरीके पर बात की थी। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए, इस अंक में हम 'भाषा और बोली' पर चर्चा की है। चर्चा करने का एक मुख्य कारण है भाषा व बोली के अन्तर की समझ बनाना। अमूमन, किसी भी सामान्य व्यक्ति से पूछकर देखिए, वह अत्यधिक विश्वास से आपको भाषा व बोली में अन्तर बताने लगेगा। कहेगा, ''भाषा का व्याकरण होता है, बोली का नहीं। भाषा की लिपि होती है,बोली का नहीं।भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है जबकि बोली का स्थानीय। भाषा मानकीकृत व परिमार्जित होती है, बोली नहीं।जिसका प्रयोग साहित्य,पत्राचार,दफ्तरों, अदालतों आदि में हो वह भाषा और जो बोलचाल के लिए इस्तेमाल हो वह बोली। भाषा में शुद्ध–अशुद्ध का प्रश्न उठता है, बोली में सब चलता है आदि,आदि।''

इसे विस्तार से समझने और विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की शुरूआत करने हेतु इस अंक में **श्री रमाकान्त अग्निहोत्री,दिल्ली विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान विभाग में प्राध्यापक** के शैक्षिक संदर्भ के सितंबर–अक्टूबर 1996 में प्रकाशित आलेख '**कौन भाषा कौन बोली**' को शामिल किया गया है।

इसके साथ–साथ म0 वि0 मोरदीवा, म0 वि0 नन्दनी, जिला समस्तीपुर के नवाचारी प्रयास को साझा किया जा रहा है। अभी राज्य स्तर पर एस0 सी0 ई0 आर0 टी0 बिहार ने 46वीं विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी का आयोजन दिनांक 20–21 दिसंबर को आयोजित किया था। जिसके फोटोग्राफ आपके लिए दिए जा रहे है। साथ ही हर अंक की तरह अंग्रजी के Rhyme भी शामिल हैं।

आपके विचार और सुझाव की प्रतीक्षा रहेगी।

सधन्यवाद।

अब तक की गई चर्चा

पिछले अंक में हम लिखने पढ़ने में सहजता लाने के तरीके पर अपनी बात रखी थी। साथ ही अबतक प्रकाशित अंको का सार भी दिया था।

कौन भाषा कौन बोली

रमाकान्त अग्निहोत्री

(दिल्ली विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान विभाग में प्राध्यापक)

हर सामान्य व्यक्ति अपनी भाषा खूब अच्छी तरह से बोलता व समझता है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि हर व्यक्ति यह समझे कि वह भाषा के बारे में काफी कुछ जानता है। असल में सच तो यही है कि हर व्यक्ति अपनी भाषा के बारे में बहुत कुछ जानता है। लेकिन इस भाषागत ज्ञान के बारे में आम आदमी अक्सर सचेत नहीं होता। वास्तव में उस ज्ञान के बारे में उसके लिए कुछ भी विषेष कहना संभव नहीं हो पाता। यदि यह कहा जाए कि आपकी अपनी भाषा का पूर्ण व्याकरण आपके पास है – आपके दिमाग में – तो शायद अटपटा सा लगे। लेकिन यह बिल्कुल सच है। दूसरी तरफ भाषा के बारे में जो बातें लोग अक्सर कहते है वे एकदम निराधार अवधारणाओं से जुड़ी रहती हैं। इन निराधार अवधारणाओं के कारण काफी सामाजिक, मानसिक व शैक्षिक नुकसान होता है। यदि हम सब भाषा की प्रवृति को समझने का प्रयास करें तो शायद इस नुकसान से बचने का कोई साधन निकले।

व्याकरण की समझ कितनी

अपनी भाषा के बारे में आपका ज्ञान पूर्ण एवं त्रुटिरहित है। अपनी भाषा बोलने और समझने में आप कभी गलती नहीं करते। यदि करें तो तुरत उसमें सुधार कर लेते हैं। इसी तरह कोई दूसरा आपकी भाषा बोलने में गलती करता है तो आप उसे तुरत पकड़ लेते हैं।

आप नित नए – नए वाक्य बोल व समझ सकते हैं। यही नहीं आपको यह भी ज्ञात है कि किस सामाजिक संदर्भ में कैसी भाषा उचित रहेगी। लेकिन इस ज्ञान के बारे में मुक्त रूप से चर्चा करना केवल भाषाविदों तक ही सीमित रह गया और भाषाविद जिस भाषा में बात करते हैं वह आम आदमी की समझ में आती नहीं।

उदाहरण के लिए , यह तो हर हिन्दी भाषी जानता है कि–

गीता खाना खाता है।

ठीक वाक्य नहीं है। कुछ सोचकर शायद वह यह भी बता दे कि ''गीता' स्त्रीलिंग है इसलिए किया पुल्लिंग नहीं हो सकती। (गो कि भारत में ही ऐसी अनेक भाषाएं हैं जिनमें कर्ता के पुल्लिंग या स्त्रीलिंग होने से क्रिया पर कोई असर नहीं पड़ता – अंग्रेजी भी ऐसी ही भाषा है)। लेकिन निम्न दो वाक्यों में यह नियम लागू नहीं होता।

मोहन ने खाना खाया।

गीता ने खाना खाया।

मोहन पुल्लिंग है व गीता स्त्रीलिंग फिर भी दोनों ने खाया। यह कहना कि–

गीता ने खाना खाई।

गलत है। इसी तरह यदि आप दुविधा में पड़े हिन्दी भाषी का ध्याान दो वाक्यों

मोहन ने रोटी खाई।

गीता ने रोटी खाई।

की ओर ले जाएं, तो शायद कुछ कठिनाई से वह यह बता पाए कि यदि कर्ता के सामने 'ने' आ जाए तो क्रिया कर्म से मेल खाती है। सो कर्ता कोई भी हो – पुल्लिंग या स्त्रीलिंग – पर 'ने' आने पर

.....खाना खाया (खाना पुल्लिंग है)

.....रोटी खाई (रोटी स्त्रीलिंग है)

लेकिन निम्न दो वाक्यों के बारे में हिन्दी भाषी क्या कहेगा!

मोहन ने गीता को मारा।

गीता ने मोहन को मारा।

ऐसी ही समस्याओं को लेकर भाषा वैज्ञानिक भाषा से जूझते रहते है।अब देखिए नाः

गीता मोहन को मारती है। तो सही है लेकिन

गीता ने मोहन को मारी । ठीक नहीं है।

वास्तव में जैसे ही एक हिन्दी भाषी ऐसा कोई वाक्य सुनता है उसे मालूम होता है कि कोई अहिन्दी भाषी हिन्दी बोलने का प्रयास कर रहा है। साफ है कि हर व्यक्ति अपनी भाषा का व्याकरण पूरी तरह से जानता है।लेकिन उस व्याकरण का अध्ययन करना व उसके बारे में बातचीत कर सकना बिल्कुल अलग बात है; कठिन बात है।

खैर हमें तो उस ज्ञान के बारे में बातचीत करनी थी जिसका आधार अवैज्ञानिक व बेबुनियाद अवधारणाएं है।हर सामान्य व्यक्ति इस तरह के ज्ञान पर आधारित अनेक विश्वास या मान्यताएं पाल लेता है, निर्णय ले लेता है, लोगों को अलग श्रेणियों में बांट लेता है और कुछ घृणा व कुछ से प्यार करने लगता है।

इन निराधार मान्यताओं को समझना आवश्यक है। बिना समझे इनसे छुटकारा पाना संभव नहीं।

कौन भाषा कौन बोली

एक मुख्य मसला है भाषा व बोली का। किसी भी सामान्य व्यक्ति से पूछकर देखिए, वह अत्यधिक विश्वास से आपको भाषा व बोली में अन्तर बताने लगेगा। कहेगा, ''भाषा का व्याकरण होता है, बोली का नहीं। भाषा की लिपि होती है,बोली का नहीं।भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है जबकि बोली का स्थानीय। भाषा मानकीकृत व परिमार्जित होती है, बोली नहीं। जिसका प्रयोग साहित्य, पत्राचार, दफ्तरों, अदालतों आदि में हो वह भाषा और जो बोलचाल के लिए इस्तेमाल हो वह बोली। भाषा में शुद्ध–अशुद्ध का प्रश्न उठता है, बोली में सब चलता है आदि, आदि।''

वास्तव में इस तरह के सभी तर्क गलत हैं, समाज के लिए अत्यधिक हानिकारक हैं। भाषाई दृष्टि से भाषा बोली में कोई अन्तर नही है। दोनों का व्याकरण होता है। दोनो नियमबद्ध है।किसको भाषा कहा जाएगा किसको बोली यह एक सामाजिक प्रश्न है; राजनैतिक प्रश्न है।सत्ताधारी व पैसे वाले लोग अक्सर जो बोली बोलते हैं,वह भाषा कहलाने लगती है।उसी में साहित्य लिखा जाता है। स्कूलों में शिक्षा का माध्यम बनकर वही बोली मानकीकृत भाषा बन बैठती है।उसी से मिलते–जुलते, बात–चीत करने के अन्य तरीके उस 'भाषा की बोलियां' कहलाने लगते हैं।भाषा और समाज के इस रिश्ते को समझना आवश्यक है।

शायद यह ठीक ही कहा गया है कि भाषा केवल एक सशस्त्र बोली है।मुख्य प्रश्न वास्तव में दृष्टिकोण का है। एक गरीब बच्चे की भाषा को एक मानकीकृत भाषा के मापदंड से निरंतर नापना कहां तक जायज है।

एक ही मापदंड क्यों?

व्याकरण के प्रश्न को लीजिए। हिन्दी का अपना व्याकरण है। लेकिन ब्रज, अवधि व मैथिली का भी अपना व्याकरण है, जो हिन्दी से कदाचित अलग है। हिन्दी व्याकरण को मापदंड मानकर ब्रज के व्याकरण को क्यों देखा जाए? सदियों से लोग संस्कृत, ग्रीक, लैटिन आदि को आधार मानकर संसार की सभी भाषाओं में शब्दों के आठ कारकगत रूप तलाश करते रहे हैं।हिन्दी के हर व्याकरण में आपको संस्कृत की ही तरह आठ कारक रूप दिखाने का प्रयत्न रहेगा। लेकिन वास्तव में हिन्दी में तीन ही कारकों के अनुसार शब्द परिवर्तन होता है। यथा :

'लड़का' आदि			'किताब' आदि		
	एकवचन	बहुबचन		एकवचन	बहुबचन
कर्ता	लड़का	लड़के	कर्ता	किताब	किताबें
कर्म/अन्य	लड़के	लड़कों	कर्म/अन्य	किताबें	किताबों
संबोधन	हे लड़के!	हे लड़कों!	संबोधन	हे किताब!	हे किताबों!

हिन्दी की कारक व वचन संरचना समझने के लिए इससे अधिक आवश्यकता नहीं है। इसी प्रकार हिन्दी व्याकरण से अन्य भाषाओं को नापना उचित नहीं है। हिन्दी का –
नन्द का नन्दन कदम्ब के पेड़ के नीचे धीरे–धीरे मुरली बजाता है।

ब्रज भाषा में –

नन्द को नन्दन कदम के तरू तर धीरे–धीरे मुरली बजावै।

हो जाएगा। और मैथिल कोकिल विद्यापति ने इसे यूं कहा;

नन्दक नन्दन कदमक तरूतर धीरे धीरे मुरली बजाव।

मैथिली का नियम है कि 'नन्द' व 'नन्दन' में जो संबंध है वह 'क' के प्रयोग से दिखाया जाएगा; ब्रज में वही 'को' के व हिन्दी में वह 'का' के प्रयोग से ।तो :

हिन्दी : नन्द का नन्दन

ब्रज : नन्द को नन्दन

मैथिलीः नन्दक नन्दन

यह कहना कि ब्रज या मैथिली भाषा को सदैव 'नन्द का नन्दन' ही कहना चाहिए उचित न होगा। ऊपर के उदाहरणों से यह भी स्पष्ट हो गया होगा कि कब हिन्दी –ब्रज–मैथिली एक दूसरे से घुल मिल जाएंगी और कब अपना–अपना स्वतंत्र रूप दिखाएंगी, यह कहना भी कोई आसान काम नहीं।

आप मैथिली,सिंधी,कोंकणी,नेपाली या मणिपुरी को कब 'भाषा'का दर्जा देना चाहते हैं, यह एक राजनैतिक प्रश्न है, भाषाई नहीं।

सत्ता से जुड़ा सवाल

व्याकरण को लेकर शुद्ध–अशुद्ध का प्रश्न भी बार – बार सामने आता है। विशेषकर अध्यापक स्वयं को शुद्ध व मानकीकृत भाषा का रखवाला मान लेते है। मैने पहले भी कहा कि प्रश्न समझने व दृष्टिकोण का है।पहली बात – बच्चा जिस भाषा को लेकर स्कूल आता है वह पूर्णरूप से व्याकरण युक्त है। दूसरी बात – उसकी भाषा उसकी शिक्षा का माध्यम नहीं बन पाई यह एक राजनैतिक, सत्तागत प्रश्न है।तीसरी बात – मानकीकृत भाषा के सीखने के प्रयास में जो अशुद्धियां बच्चा करता है वे निराधार या बेतरतीब नहीं होतीं, उनकी अपनी संरचना होती है। चौथी बात–किसी अध्यापक के शुद्ध करने से बच्चे अपनी गलती एकदम सुधार नहीं लेते। गलतियां समय आने पर ही सुधरती है। पांचवी बात – कोई भी बच्चा, कोई भी भाषा (पहली, दूसरी या दसवीं) बिना गलतियां किए नहीं सीखता।

साहित्य के प्रश्न को ही लीजिए। अक्सर कहा जाता है कि जिसमें शिष्ट साहित्य लिखा जाए वह भाषा, शेष उस भाषा की बोलियां। आम आदमी आज यही समझता है कि खड़ी बोली हिन्दी ही मानकीकृत भाषा, साहित्य उसी में लिखा जाता है; अखबारों, दफ्तरों आदि में यही प्रयोग होती है। ब्रज, अवधी, मैथिली आदि हिन्दी की बोलियां है।

कैसी विडम्बना है – अवधी, जिसमें तुलसी कृत रामचरित मानस लिखा गया; ब्रज, जिसमें सूरदास ही नहीं अपितु अनेक हिन्दु व मुसलमान लेखकों ने महान साहित्य की रचना की व मैथिली जिसमें विद्यापति ने लिखा – सब आज हिन्दी की माताएं न होकर उसकी बोलियां हो गई। जब राजनीति व सत्ता का केन्द्र कन्नौज था तो साहित्य की शिष्ट भाषा थी 'अपभ्रंश'। खड़ी बोली, ब्रज, अवधी आदि का जो भी रूप रहा हो, उसकी बोलियां कहलाई। इसी तरह जब राजनैतिक केन्द्र ब्रज – क्षेत्र बना तो शिष्ट साहित्य की भाषा 'ब्रज' हो गई और दिल्ली,मेरठ की खड़ी बोली उसकी बोली कहलाई।शासन व सत्ता का केन्द्र दिल्ली, मेरठ हुआ तो ब्रज, अवधी आदि हिन्दी की बोलियां कहलाने लगीं। वही बात कि सवाल दरअसल भाषा व राजनीति के संबंध को समझने का है। उसको समझकर एक ऐसा सजग दृष्टिकोण बनाने का है जो वैज्ञानिक व संरचनात्मक हो। इसलिए साहित्य के आधार पर भाषा व बोली में अन्तर संभव नहीं है।

कोई भी लिपि, कोई भी भाषा

लिपि के प्रश्न को लीजिए। अक्सर लोग ऐसे बात करते हैं जैसे भाषा व लिपि का कोई जन्मजात संबंध हो। वास्तव में संसार की सभी भाषाएं एक ही लिपि में लिखी जा सकती हैं। और एक ही भाषा को लिखने के लिए आप संसार की सभी लिपियों का प्रयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा व देवनागरी व रोमन लिपि को लीजिएः

हिन्दी (देवनागरी) : मोहन खेल रहा है। हिन्दी (रोमन) mohan khel rahaa hai.

अंग्रेजी (रोमन) : Mohan is playing. अंग्रेजी (देवनागरी) मोहन इज प्लेइंग।

भारत की अनेक भाषाएं देवनागरी में लिखी जाती हैं व एक संस्कृत को लिखने के लिए भारत में ही अनेक लिपियों का प्रयोग होता है। ऐसा भी नहीं है कि लिपि होने से ही किसी भाषा में साहित्य की संभावना होती है। ऋगवेद जैसे साहित्य के लिए सदियों किसी लिपि की आवश्यकता नहीं पड़ी। सारे भारत में फिर भी ऋगवेद का वाचन एक ही तरह से होता है। गांव – गांव में रामचरितमानस नित गाया, सुना जाता है – लिपि की कोई आवश्यकता नहीं। भाषा प्राचीन है; लिपि अभी कल का अविष्कार। लिपि होने न होने से भाषा बोली में अन्तर करना संभव नहीं। आप कुछ दोस्त मिलकर अपनी भाषा के लिए बड़ी आसानी से अपनी एक अलग लिपि बना सकते है। उसे कितना राजनैतिक समर्थन मिलेगा वह एक अलग बात है। संथाली आज कई लिपियों में लिखी जाती है – देवनागरी, रोमन, बंगला, उड़िया व ओल चिक्की। इनमें कौन सी लिपि मानकीकृत हो जाएगी यह एक राजनैतिक प्रश्न है। अभी द्वंद जारी है।

विस्तृत क्षेत्र व व्यापक प्रयोग की खूब ठहरी। बार बार कहो कि हिन्दी का क्षेत्र विस्तृत है,प्रयोग व्यापक। जगह – जगह पोस्टर लगाओ। अखबारो में नित इश्तहार दो, रेडियो व टी वी पर प्रयोग करो और न जाने क्या–क्या। बातो बातों में हिन्दी को 'संवैधानिक राजभाषा' से 'राष्ट्रभाषा' का दर्जा दे दो। शिक्षा का माध्यम हिन्दी कर दो। और फिर कहो लो भाई हिन्दी हुई भाषा व ब्रज, अवधी, मैथिली, बुन्देली, भोजपुरी आदि उसकी बोलियां। इन 'बोलियों' को बोलने वालों की अपार संख्या को हिन्दी में जमा कर दो और फिर कहो कि देखो, करोड़ों लोग हिन्दी बोलते है, कन्याकुमारी से हिमालय तक। थोड़ा धीरज रख कर ध्यान से सोचिए– हिन्दी आखिर कहां बोली जाती है? मानकीकृत हिन्दी का प्रयोग कहां–कहां होता है?

क्या आप या आपके दोस्त घर पर या आपस में हिन्दी बोलते हैं या आप भोजपुरी,अवधी, मैथिली, मगही, बुन्देली, ब्रज आदि – आदि बोलते है। मानकीकृत हिन्दी शायद मेरठ, इलाहाबाद व बनारस के कुछ हिस्सों में बोली जाती है। क्या चम्बा व हमीरपुर (हिमाचल), रोहतक व भिवानी (हरियाणा), जैसलमेर व सवाईमाधोपुर (राजस्थान), छपरा व बलिया (बिहार), छिंदवाड़ा व रायपुर में मानकीकृत हिन्दी बोली जाती है।

मेरी हिन्दी में निम्न प्रयोग देखकर मेरे कुछ साथी अक्सर हंसते हैं, लेकिन जब उनके अपने बच्चे वही प्रयोग करते हैं तो लाचार से हो जाते है :

मैने बाजार जाना है। मेरे को काम है। मुझे एक कौली दे दो।

जो पंजाबी कहकर मेरा मजाक उड़ाते हैं वे यह भूल जाते हैं कि राजनीति व सत्ता का केन्द्र अब दिल्ली है। हिन्दी भी यहीं की चलेगी।या फिर लाखों पंजाबी जो अपनी मातृभाषा हिन्दी बताते हैं या लाखों ऐसे लोग जिनकी मातृभाषा हिन्दी गिन ली जाती है– हिन्दी बोलने वालों की संख्या में से कम कर देने चाहिए।

साफ है कि लिपि, व्याकरण, साहित्य, विस्तृत क्षेत्र व व्यापक प्रयोग आदि के आधार पर भाषा व बोली में अन्तर करना संभव नहीं। फिर भी यह अन्तर क्यों किया किया जाता है? और इतनी गहराई से किया जाता है कि हम 'हिन्दी' को भाषा व 'ब्रज' या 'बुंदेली' को बोली कहने में कुछ भी झिझक महसूस नहीं करते। हिन्दी को एक मानकीकृत भाषा का दर्जा देने के लिए व ब्रज, अवधी आदि को उसकी बोलियां बनाने के लिए आपके चारों ओर निरन्तर प्रयास हो रहे हैं; उन्हें जरा गौर से समझने का प्रयास करें।

आपने साझा किया

- बच्चों में सृजनात्मकता हेतु निजी खर्च से प्रकाशित कर रहे हैं पत्रिका
- अब तक प्रकाशित कर चुके हैं 'शिक्षा रत्न' पत्रिका का आठ अंक व 'यादगार लम्हें' किताब का दो अंक
- जून 2015 से नियमित प्रकाशित हो रही है अर्द्धवार्षिक पत्रिका एवं हस्तलिखित मासिक समाचार–पत्र

कहा जाता है कि प्रतिभाएं संसाधनों का मोहताज नहीं होती है। वे तो संसाधनों का निर्माण स्वयं ही कर लेते हैं। हम बात कर रहे हैं समस्तीपुर जिले के एक सरकारी मिड्ल स्कूल की जहां साहित्य की नयी पौध पल्लवित हो रहा है। जी हां बच्चों में सृजनात्मक विकास के लिए **समस्तीपुर प्रखंड के उत्क्रमित मध्य विद्यालय मोरदीवा** से नियमित रूप से 'शिक्षा रत्न' अर्द्धवार्षिक पत्रिका व 'बाल रचना' हस्तलिखित मासिक समाचार–पत्र प्रकाशित हो रहा है। शिक्षक गगन कुमार के संपादन में जून 2015 से आरंभ हुए प्रकाशन के बाद अब तक 'शिक्षा रत्न' पत्रिका का आठ अंक तथा 'यादगार लम्हें' का दो अंक प्रकाशित हो चुका है। 'शिक्षा रत्न' पत्रिका में जहां बच्चों व शिक्षकों की सृजनात्मकता को प्रोत्साहित किया जाता है वहीं 'यादगार लम्हें' किताब में स्कूल की विभिन्न गतिविधियों को संकलित किया जाता है। इसके अलावा स्कूल के वर्ग छह, सात व आठ से नियमित रूप से 'बाल रचना' हस्तलिखित मासिक समाचार–पत्र भी प्रकाशित किया जाता है जिसका आरंभ अक्टूबर 2016 में किया गया था। खास बात यह कि 'बाल रचना' हस्तलिखित मासिक समाचार–पत्र का प्रत्येक माह अलग–अलग बच्चे संपादक बनते हैं तथा उसमें शामिल सभी रचनाएं बच्चों द्वारा ही तैयार भी की जाती है। शिक्षक गगन कुमार बच्चों में सृजनात्मक विकास के लिए अपने निजी खर्च पर स्कूल से पत्रिका प्रकाशित कर एक मिसाल कायम किये है। आप भी अपने विद्यालय की गतिविधियों को साझा करें।

थीम आधारित उपस्थिति

आदर्श मध्यविद्यालय नन्दनी, समस्तीपुर ने अपने विद्यालय में किए गए नवाचार को प्रेषित किया है।

थीम आधारित उपस्थिति:-इसके तहत वर्ग 1-8 तक के बच्चे उपस्थिति दर्ज करने के समय शिक्षक द्वारा नाम या रॉल नंबर पुकारे जाने पर उपस्थित श्रीमान या उपस्थित मैडम न बोलकर अलग-अलग फल-फूल, जानवर,पक्षी,राज्य-राजधानी,शारीरिक अंग,देश-राजधानी आदि के नाम बोलते है| इस तरह सुनते-सुनते यह विधागत तथ्य सभी बच्चों को याद हो जाता है तथा उनकी उपस्थिति भी दर्ज हो जाती है|उपस्थिति दर्ज करते समय बच्चे आनंद का अनुभव करते है| जब निर्धारित थीम बच्चों को याद हो जाता है तब उस थीम को बदल दिया जाता है| यह बच्चों का दैनिक उपस्थिति दर्ज करने के दौरान विभिन्न विधागत तथ्यों को याद करने हेतु उपयोगी होता है|

फोटो संकलन : 46 वीं राज्य स्तरीय विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी 2018 & 19

बच्चों के लिए ''46 वीं राज्य स्तरीय विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी 2018–19'' दिनांक 20–21 दिसम्बर, 2018 को राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार, पटना के परिसर में आयोजित किया गया। एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 नई दिल्ली के दिशा निर्देश में यह राज्य स्तरीय प्रदर्शनी **''बच्चों के लिए राज्य स्तरीय विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी''** के रूप में प्रत्येक वर्ष आयोजित किया जाता है। यह एक श्रृंखलाबद्ध कार्यक्रम है जो विद्यालय स्तर से होकर राज्य स्तर पर आयोजित होती है। बच्चों शिक्षकों एवं सामान्य जन के बीच विज्ञान,गणित एवं पर्यावरण को लोकप्रिय बनाने एवं बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास हेतु यह प्रदर्शनी आयोजित होती है। इस वर्ष के प्रदर्शनी का मुख्य विषय – **''जीवन की चुनौतियों के लिए वैज्ञानिक समाधान''** निर्धारित किया गया था। मुख्य विषय निम्न उपविषयों में विभाजित थे।

1 कृषि एवं जैविक खेती, 2 स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, 3 संसाधन प्रबंधन, 4 अपशिष्ट प्रबंधन, 5 परिवहन और संचार, 6 गणितीय प्रतिरूपण 7 अन्य कोई, जो मुख्य विषय से संबंधित हों।

बिहार के अधिकांश जिले से बच्चे प्रदर्शनी में अपने माडल के साथ शामिल हुए।

अंग्रेजी सिखाएं

Little Puppy

I have a little puppy,
It is always happy,
Soft like a cotton doll,
White like a snow ball,
Never keeps mum and mute,
Lovely Tommy looks cute.

Arshad Reza Teacher,
P S Pachasa, Nalanda

12 MONTHS

Let's know about twelve months,
One by one, while it comes.
January, February, March, April
Make a plan for picnic deal.
May & June has short names
Children love outdoor games.
Rainwater wipes up all dust
In the month of ***July & August***.
September, October, November, December
Altogether completes a one-year calendar.
It's the end of this year, Dear
Prepare yourself for a New Year.

Shafaque fatma
Primary school Ahmadpur, (GOV.) Aurangabad

आपके विचार

आपके अनुभव अमूल्य है। हम चाहते हैं कि आपसे सार्थक संवाद स्थापित हो। इस अंक में हम पुनः पिछले विषय ही आपके समक्ष रख रहे है। आपके विचार आलेख के रूप में अपेक्षित है।

1. शिक्षकों का सतत क्षमता विकास के मायने क्या और कैसे ?
2. कक्षा प्रबंधन और शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएँ

आप अपने संकुल, विद्यालय, बी० आर० सी० में चर्चा भी कर सकते है। चर्चा का समेकन भी हमें प्रेषित कर सकते हैं।

आप अपने विचार अपने समूह के अलावे हमें भी भेज सकते हैं।

e-Mail - esamvaad.scert@gmail.com
WhatsApp - **9973462621**

Implementation Support Agency for SCERT, Bihar

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
महेन्द्रू, पटना, बिहार - 800006